नवोदय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

डॉ सुशील कुमार
अस्सिटेंट प्रोफेसर (शिक्षा संकाय)
देवनागरी कॉलेज, मेरठ (उ०प्र०)

डॉ सुधीर कुमार
विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)
एस0एस0वी0 कॉलेज, हापुड़ (उ०प्र०)

सारांशिका

प्रस्तुत शोध पत्र में उ०प्र० के पश्चिमी संभाग के नवोदय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस शोध में यह पाया गया कि नवोदय विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर उच्च व्यक्तित्व आवश्यकता एवं निम्न व्यक्तित्व आवश्यकता कारकों का प्रभाव नहीं पाया गया। अर्थात् मध्यमान से उच्च एवं मध्यमान से निम्न व्यक्तित्व आवश्यकता वाले दोनों प्रकार के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि समान पाई गयी।

मुख्य शब्द : नवोदय विद्यालय के छात्र, व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न स्तर, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना : नवोदय विद्यालय प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों की शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए देश के विभिन्न भागों में स्थापित किये गये है। देश के अच्छे विद्यालय ज्यादातर शहरी क्षेत्रों मे स्थित है। ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए जो कि प्रायः निर्धन परिवार से होते है। इन्हे अच्छे विद्यालयों की सुविधाएँ या तो उपलब्ध नहीं होती या इनकी पहुँच से बाहर होती है। इन विद्यालयों में 75 प्रतिशत स्थान ग्रामीण तथा 25 प्रतिशत नगरों के छात्रों के लिए होते है। नवोदय विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की कार्य योजना का एक नूतन प्रयोग है।

इन गति निर्धारक विद्यालयों ने किस प्रकार के सगंठनात्मक परिवारों को विकसित किया है यह अभी तक ज्ञात नहीं हो सका।

अध्ययन की आवश्यकता : पारीक, डी0एल0 (1990) ने राजस्थान में केन्द्रीय स्कूलों, राज्य के सरकारी स्कूलों और प्राइवेट स्कूलों में अध्ययन करने वाले किशोरों के आत्म सम्प्रत्यय, व्यक्तित्व व गुणों और आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होने पाया कि विभिन्न प्रकार के स्कूलों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों और आकाक्षा के स्तर में कोई सार्थक संबंध नहीं होता। अधिकांश अध्ययनों में शैक्षिक उपलब्धि का व्यक्तित्व, के साथ धनात्मक सह सम्बन्ध पाया।

ऐसे अध्ययन बहुत कम संख्या में पाये गये जिनमें शोधकर्ताओं ने शैक्षिक उपलब्धि का व्यक्तित्व के साथ ऋणात्मक अर्थात् विपरीत सह सम्बध था। इसी कारण शोधकर्ता के मन में यह इच्छा बनी कि अपने परिक्षेत्र यानी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित इन विशेष प्रकार के विद्यालयों जिन्हें नवोदय विद्यालय कहा जाता है के छात्रों में यह संबंध किस प्रकार का पाया जाता है। इसकी सत्यता की परख करने हेतु शोधकर्ता ने व्यक्तित्व आवश्यकता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव जानने के लिए यह शोध किया।

शोध शीर्षक के महत्त्वपूर्ण तकनीकी पदों की परिभाषा :

प्रस्तुत शोध के शीर्षक में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की कार्यात्मक व्याख्या को निम्नलिखित रूप में अभिव्यक्त किया गया है–

(i) **नवोदय विद्यालय के छात्र** : नवोदय विद्यालय के छात्र से अभिप्राय उन छात्रों से है जो शोधकर्ता द्वारा चयनित जनपद में स्थित भारत सरकार द्वारा संचालित नवोदय विद्यालय में कक्षा 11 व 12 में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

(ii) **व्यक्तित्व आवश्यकताएँ** : व्यक्तित्व आवश्यकताओं से अभिप्राय यह है कि इस हेतु सम्बन्धित शोध उपकरण में प्रयुक्त सभी दस आयामों यथा (1) सम्प्राप्ति आवश्यकता, (2) प्रदर्शन आवश्यकता, (3) स्वातन्त्रय आवश्यकता, (4) सानिध्य आवश्यकता, (5) पराश्रय आवश्यकता, (6) प्रभुत्व आवश्यकता, (7) आत्महीनता आवश्यकता, (8) परोपकार आवश्यकता, (9) सहनशीलता आवश्यकता तथा (10) आक्रामकता आवश्यकता को सम्मिलित करना है।

(iii) **विभिन्न स्तर** : विभिन्न स्तर से अभिप्राय व्यक्तित्व आवश्यकताएँ, मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के उस उच्च एवं निम्न स्तर से हैं जो चयनित छात्रों द्वारा संबंधित शोध उपकरण में निर्धारित प्राप्तांकों के मध्यमान से उच्च एवं निम्न अंक क्रमशः प्राप्त किया जाता हैं।

(iv) **शैक्षिक उपलब्धि** : शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय यह है कि इस हेतु सम्बन्धित शोध उपकरण में प्रयुक्त सभी पाँचों आयामों यथा (1) भाषात्मक उपलब्धि परीक्षण, (2) सामान्य विज्ञान उपलब्धि परीक्षण (3) सामाजिक अध्ययन उपलब्धि परीक्षण (4) कम्प्यूटर उपलब्धि परीक्षण तथा (5) मौलिक गणित उपलब्धि परीक्षण को सम्मिलित करने से है।

शोध के प्राप्य उद्देश्य

(i) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संचालित नवोदय विद्यालय के

छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के उच्च एवं निम्न स्तर पर उनकी विभिन्न प्रकार की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

(ii) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संचालित नवोदय विद्यालय के छात्रों की बालिकाएँ एवं बालकों तथा कला एवं विज्ञान छात्रों के संदर्भ में विभिन्न प्रकारों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

(iii) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संचालित नवोदय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के विभिन्न प्रकार की शैक्षिक उपलब्धि के साथ बालिकाएँ एवं बालकों, कला छात्र एवं विज्ञान छात्रों के लिए सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

किसी भी समस्या से संबंधित परिकल्पना का निर्माण प्रत्येक शोधकर्ता सामान्य व शून्य परिकल्पना के रूप में कर सकता है। शून्य परिकल्पना को सांख्यिकीय परिकल्पना भी कहते है। प्रस्तुत शोध अपने आप में एक नवीन व महत्त्वपूर्ण अध्ययन है और इस प्रकार के उद्देश्यों को लेकर किए गये अध्ययनों का भी इस सम्भाग में अभी अभाव है। अस्तु प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्ता ने उद्देश्यों की प्रकृति को देखते हुए शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है। जिनका शोध के प्राप्य उद्देश्यों के क्रम में विवरण निम्नवत है –

(i) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संचालित नवोदय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के उच्च एवं निम्न स्तर पर उनकी विभिन्न प्रकारों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच सार्थक अन्तर नहीं है।

(ii) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संचालित नवोदय विद्यालय के छात्रों की बालिकाएं एवं बालकों तथा कला एवं विज्ञान छात्रों के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांकों के बीच सार्थक अन्तर नही है।

(iii) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संचालित नवोदय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के शैक्षिक उपलब्धि के साथ बालिकाएँ एवं बालकों, कला छात्र एवं विज्ञान छात्रों के लिए प्राप्तांकों के बीच सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं हैं।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध का कार्य क्षेत्र उ0प्र0 के अर्थ एवं संख्या प्रभाग द्वारा आर्थिक स्थिति के आदार पर वर्गीकरत उ0प्र0 के कुल 26 जनपद है। इनमें से दो जनपदों में नवोदय विद्यालय स्थित नहीं है शेष बचे 24 जनपदों में से 8 जनपद मुजफ्फरनगर, मेरठ, सहारनपुर, बागपत, बिजनौर, बदायु, अमरोहा, लिये गये है। उपरोक्त जनपदों में स्थित प्रत्येक नवोदय विद्यालय से 64 छात्र लेकर कुल 512 छात्रों तक ही शोध को सीमित किया गया है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध में मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक अनुसन्धान प्ररचना के अधीन'' वर्णनात्मक अनुसन्धान शोध विधि के अन्तर्गत'' विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि'' को अपनाया गया है।

शोध उपकरण :

शोधार्थी ने नवोदय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकता के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के लिए उत्तर दाताओ से जानकारी प्राप्त करने हेतु डॉ0 मीनाक्षी भटनागर द्वारा निर्मित व्यक्तित्व परख संकेतिका का उपयोग किया है यह उपकरण उसके निर्माता द्वारा प्रमापीकृत है इसकी विश्वसनीयता 0.75 एवं वैधता 0.55 उसके निर्माता द्वारा सार्थक रूप से प्राप्त की गई है जो शोध की दृष्टि से मान्य मानी जाती है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थो में तभी प्रतिबिम्बित होता है जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाये। इसके लिए यह आवश्यक है कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये उपकरण द्वारा प्राप्त जानकारी को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किये गये है जो निम्नानुसार है। तालिका 5.9

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उपरोक्त तालिकाओं के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण'' के सभी पाँचों आयामों यथा– (1) भाषा, (2) सामान्य विज्ञान, (3) सामाजिक अध्ययन, (4) कम्प्यूटर तथा (5) मौलिक गणित पर नवोदय विद्यालय के छात्रों के दोनों समूह यानी उच्च व्यक्तित्व वाले छात्रों तथा निम्न व्यक्तित्व वाले छात्रों के टी–मूल्य और उसके परिणाम विश्वास के न्यूनतम स्तर 95 प्रतिशत पर डी0एफ0 = 510 के लिए अपने संबंधित टी–तालिका मूल्य 1.96 से कम होने के कारण असार्थक है। इससे यह अर्थ निकलता है कि अध्ययन हेतु इस सम्बन्ध में बनायी गयी शून्य परिकल्पना 2(1) ''पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संचालित नवादेय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व आवश्यकता के उच्च एवं निम्न स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं है'' स्वीकृत की जाती है। जिसका अभिप्राय यह है कि नवोदय विद्यालय के छात्रों के दोनों समूहों यानी उच्च व्यक्तित्व के छात्रों तथा निम्न व्यक्तित्व के छात्रों के बीच अध्ययन में प्रयुक्त ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण'' के इन पाँचों आयामों पर सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों समूह के छात्रों की उपलब्धि इन आयामों पर समान है। उपरोक्त टी–मूल्य के परिणाम की मीमासां यह भी है कि मनोवैज्ञानिक निर्धारक के रूप में लिये गये स्वतंत्र चर–व्यक्तित्व आवश्यकता को आश्रित चर–नवोदय विद्यालय के छात्रों के ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण'' के उपरोक्त पाँचों आयामों यथा–(1) भाषा, (2) सामान्य विज्ञान, (3) सामाजिक अध्ययन, (4) कम्प्यूटर तथा (5) मौलिक गणित को प्रभावित करने के सम्बन्ध में सार्थक कारक नहीं पाया गया, अर्थात् व्यक्तित्व आवश्यकता का इन आयामों पर प्रभाव नहीं था।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्राप्ति यह है कि अध्ययन उद्देश्यों के सम्बन्ध में बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गयी जिसका अर्थापन यह है कि नवोदय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व आवश्यकता कारकों का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया अर्थात् उच्च तथा निम्न व्यक्तित्व आवश्यकता वाले दोनों छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि समान पायी गयी।

सन्दर्भ सूची :

1. **गेरेट, एच०ई०** : स्टेटिस्टीक्स इन साईक्लोजी एण्ड एजुकेशन, बम्बई, वकील्स फीफर एण्ड सीमान्स प्रा०लि०, 1973
2. **फरगुसन, जी०ए०** : स्टेटिकल एनलैसिस इन साइक्लोजी एण्ड एजुकेशन, न्यूयार्क मैक ग्रा–हिल बुक कं०, 1966
3. **फीमैन, एफ०एस०** : थ्योरी एण्ड प्रेक्टिकल ऑफ साइक्लोजिकल टैस्टिंग, औक्सफोर्ड एण्ड आई०बी०ए० पब्लिशिंग कं०, कलकत्ता, 1965
4. **फेस्टिंगर, एल०** : 'विश, एक्सपेक्टेशन एण्ड ग्रुप स्टैण्डर्ड्स एज अफैक्टिंग लेवल ऑफ एसपाइरेशन'', जे० एब्नार्मल सोशोलिजकल साइक्लो०, 1942
5. **बुच, एम०बी० (एडी०)** : सैकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एन एजुकेशन, सोसाइटी फॉर एजुकेशन रिसर्च एण्ड डवलपमैन्ट, बरोदा, 1979
6. **भटनागर, आर०पी०** : 'ए स्टडी ऑफ सैल्फ–कॉनसैप्ट ऑफ ब्राइट एचीवर्स एण्ड नॉन–एचीवर्स', जे० एजु० एण्ड साइको० रिव्यू, 2006
7. **मंजूर अहमद एण्ड कोम्बस, पी०एचस० (एडी०)** : एजुकेशन फॉर रूरल डवलपमैन्ट न्यूयार्क, प्रालेजर 1975
8. **कार्टर, वी०जी०** : इन्ट्रोक्सन टू एजुकेशनल रिसर्च (सैकण्ड एडीसन) एप्पलटन–क्रोफ्ट्स, न्यूयार्क, 1963
9. **श्रीवास्तव, डी०एन०** : व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2004।